धंन धंन सखी मेरे

धंन धंन सखी मेरे सोई रे दिन, जिन दिन पिया जी सो हुओ रे मिलन।
धंन धंन सखी मेरे हुई पेहेचान, धंन धंन पिउ पर मैं भई कुरबान।।

धंन धंन सखी मेरे नेत्र अनियाले, धंन धंन धनी नेत्र मिलाए रसाले।
धंन धंन मुख धनी को सुन्दर, धंन धंन धनी चित चुभायो अन्दर।।

धंन धंन धनी के वस्तर भूखन, धंन धंन आतम से न छोडूं एक खिन।
धंन धंन सखी मैं सजे सिनगार, धंन धंन धनिएं मोकों करी अंगीकार।।

धंन धंन सखी मेरे पिउ कियो विलास, धंन धंन सखी मेरी पूरी आस।
धंन धंन सखी मैं भई सोहागिन, धंन धंन धनी मुझ पर सनकूल मन।।

धंन धंन नूर सब में रह्यो भराई,देखे आतम सो मुख कह्यो न जाई।
धंन धंन साथ छक्यो अलमस्त, धंन धंन प्रेम माती महामति।।